ISBN: 978-81-951728-6-3

साहित्य और समाज

डॉ. रजनी अवस्थी
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी
बलराम कृष्णा अकादमी
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

साहित्य और समाज दोनों एक दूसरे के पूरक हैं साहित्य और समाज के मानसिक तथा सांस्कृतिक उन्नति और सभ्यता के विकास का साक्षी हैं। साहित्य साहित्य एक ओर जहाँ समाज को प्रभावित करता हैं वहीं दूसरी ओर वह समाज से प्रभावित करता है वहीं दूसरी ओर वह समाज से प्रभावित भी होता है। साहित्य शब्द की उत्पत्ति दो शब्दों से मिलकर हुई हैं 'स' और 'हित' । 'स' शब्द का मतलब है साथ-साथ और हित शब्द का अर्थ कल्याण। इस प्रकार साहित्य का अर्थ ऐसी लिखित सामग्री से हैं जिसके प्रत्येक अर्थ में लोक हित की भावना समाई रहती हैं। प्रत्येक युग का साहित्य अपने युग के प्रगतिशील विचारों द्वारा किसी न किसी रूप में अवश्य प्रभावित होता है। साहित्य हमारी कौतूहल और जिज्ञासा व्रतियों और ज्ञान की पिपासा को तृप्त करता है।

साहित्य से ही किसी राष्ट्र का इतिहास गरिमा,संस्कृति और सभ्यता वहाँ के पूर्वजों के विचारों एवं अनुसन्धानों प्राचीन रीति रिवाजों,

ISBN: 978-81-951728-6-3

रहन- सहन तथा परम्पराओं आदि की जानकारी प्राप्त होती हैं। साहित्य ही समाज का आईना होता हैं। किस देश में कौन सी भाषा बोली जाती हैं उस देश में किस प्रकार की वेशभूषा प्रचलित है वहाँ के लोगों का कैसा रहन-सहन है तथा लोगों के सामाजिक और धार्मिक विचार कैसे हैं आदि बातों का पता साहित्य के अध्ययन से चल जाता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में- साहित्य सामाजिक मंगल का विद्यालय है यह सत्य है कि व्यक्ति विशेष की प्रतिभा से ही साहित्य रचित होता है किन्तु और भी अधिक सत्य यह है कि प्रतिभा सामाजिक प्रगति की उपज हैं।

साहित्यकार को समाज का छायाकार या चित्रकार भी कहा जाता है क्योंकि साहित्यकार अपनी कृति को समाज में चल रही मान्यताओं और परंपराओं के वर्णन द्वारा ही सजाता है इसलिए साहित्य और समाज में सम्बन्ध प्रत्येक देश के साहित्य में देखने को मिल जाता हैं। कबीर ने अपने समाज के आडम्बरों सामाजिक कुरीतियों और मान्यताओं के विरोध में। अपनी आवाज उठाई और इसी प्रकार प्रेमचंद ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में किसी न किसी समस्या के प्रति संवेदना जताई है। कोई भी साहित्यकार चाहे कितना भी अपने को समाज से अलग रखना चाहे लेकिन वह ऐसा नहीं कर पाता हैं।

कवि वाल्मीकि की पवित्र वाणी आज भी हमारे ह्दय में बसी है, रामायण के रूप में। गोस्वामी तुलसीदास जी का अमर काव्य आज अज्ञानांधकार में भटकते हुए असंख्य भारतीयों का आकाशदीप की भाँति पथ-प्रदर्शन कर रहा है।

ISBN: 978-81-951728-6-3

साहित्यकार समाज का प्राण होता है समाज में रहकर समाज की रीति-नीति, धर्म-कर्म और व्यवहार वातावरण से ही अपनी रचना के लिए प्रेरणा ग्रहण करता है और लोक भावना का प्रतिनिधित्व करता है। अतः समाज की जैसी भावनाएं और विचार होंगे वैसा ही तत्कालीन साहित्य भी होगा। इस प्रकार सामाजिक गतिविधियों तथा समाज में चल रही परम्पराओं से समाज का साहित्य अवश्य प्रभावित होता है । साहित्यकार समाज का एक जागरूक प्राणी होता है। वह समाज के सभी पहलुओं को बड़ी गंभीरता के साथ लेता है और उन पर विचार करता हज फिर उन्हें अपने साहित्य के उतारता हैं।

साहित्य समाज से भाव सामग्री और प्रेरणा ग्रहण करता है तो वह समाज को दिशा बोध देकर अपने दायित्व का भी पूर्णतः अनुभव करता है। माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान और कई कवियों ने अपनी ओजपूर्ण कवितओं से न जाने कितने युवा प्राणों में देशभक्ति की भावना क्र दी। भूषण की वीर भावों से ओत-प्रोत ओजस्वी कविता से मराठों को नव शक्ति प्राप्त हुई।

समाज के विचारों, भावनाओं और परिस्थितयों का प्रभाव साहित्यकार और उसके साहित्य पर निश्चित रूप से पड़ता है। साहित्य अपने समाज का प्रतिबिम्ब है, वह समाज के विकास का मुखर सहोदर है। साहित्य वह सशक्त माध्यम है, जो समाज को व्यापक रूप से प्रभावित करता है। अच्छा साहित्य व्यक्ति और उसके चरित्र निर्माण में भी सहायक होता है। समाज के नवनिर्माण में भी सहायक होता है। सहित्य में मूलतः तीन विशेषताएं होती है जो इसके महत्व को

ISBN: 978-81-951728-6-3

रेखांकित करती है उदाहरणस्वरूप साहित्य अतीत से प्रेरणा लेता है,वर्तमान को चित्रित करता है और भविष्य का मार्गदर्शन कर्ट्स है साहित्य को समाज का दर्पण को माना जाता है। दर्पण मानवीय बाह्य विकृतियों और विशेषताओं का दर्शन कराता है।वहीं सहित्य मानव की आंतरिक विकृतियों और खूबियों को चिन्हित करता है। साहित्य समाज की उन्नति और विकास की आधारशिला रखता है। इस सन्दर्भ में आमिर खुसरो से लेकर तुलसी, कबीर, जायसी, रहीम, प्रेमचंद, भारतेन्दु, निराला, नागार्जुन आदि रचनाकारों ने समाज के नवनिर्माण में अभूतपूर्व योगदान दिया है। व्यक्तिगत हानि उठाकर भी उन्होंने शासकीय मान्यताओं के खिलाफ जाकर समाज के निर्माण हेतु कदम उठाए। कभी-कभी लेखक समाज के शोषित वर्ग के इतना करीब होता है कि उसके कष्टों को वह स्वयं भी अनुभव करने लगता है। तुलसी, कबीर, रैदास आदि ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों का समाजीकरण किया था जिससे आगे चलकर अविकसित वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में समाज में स्थान पाया। मुंशी प्रेमचंद के एक कथन को यहाँ उद्धृत करना उचित होगा "जो दलित है, पीड़ित है संतस्त है, उसकी साहित्य के माध्यम से हिमायत करना साहित्यकार का नैतिक दायित्व है।"

प्रेमचंद का किसान-मजदूर चित्रण उस पीड़ा व संवेदना का प्रतिनिधित्व करता है जिनसे होकर आज भी अविकसित एवं शोषित वर्ग गुजर रहा है। साहित्य में समाज की विविधिता, जीवन-दृष्टि और लोक कलाओं का संरक्षण होता है। साहित्य समाज को स्वस्थ

ISBN: 978-81-951728-6-3

कलात्मक ज्ञानवर्धक मनोरंजन प्रदान करता है जिससे सामाजिक संस्कारो का परिष्कार होता है। रचनाएँ समाज की धार्मिक भावना, भक्ति समाजसेवा के माध्यम से मूल्यों के सन्दर्भ में मनुष्य हित की सर्वोच्चता का अनुसन्धान करती है यही दृष्टिकोण साहित्य को मनुष्य जीवन के लिए उपयोगी सिद्ध करते है। साहित्य संस्कृति का संरक्षक और भविष्य का पथ-प्रदर्शक है। संस्कृति द्वार संकलित होकर ही साहित्य 'लोकमंगल' की भावना से समन्वित होता है। सुमित्रानंदन पंत की पंक्तियाँ इस सन्दर्भ में कहता है-

"वही प्रज्ञा का सत्य स्वरुप
हृदय में प्रणय अपार
लोचना में लावण्य अनूप
लोक सेवा में शिव
अविकार।"

उन्नीसवीं एवं बीसवीं शताब्दी को भारतीय साहित्य के सांस्कृतिक एवं समाज निर्माण की शताब्दी ने स्वतंत्रता के साथ-साथ समाज सुधार को भी संघर्ष का विषय बनाया। इस काल के साहित्य ने समाज जागरण के लिए कभी अपनी पुरातन संस्कृति को निष्ठा के साथ स्मरण किया तो कभी तात्कालिक स्थितियों पर गहराई के साथ चिंता भी अभिव्यक्ति की। साहित्य मानव को श्रेष्ठ बनाने का संकल्प लेकर चला है। व्यापक मानवीय एवं राष्ट्रीय हित इसमें निहित है। संचार साधनों के प्रसार और सोशल मीडिया के माध्यम से साहित्यिक अभिवृतियाँ समाज के नवनिर्माण में अपना योगदान अधिक सशक्तता

ISBN: 978-81-951728-6-3

से दे रही है। हालाँकि बाजारवादी प्रवृतियों के कारण साहित्यिक मूल्यों में गिरावट आई है परंतु अभी भी स्थिति नियंत्रण में है। आज आवश्यकता है कि सभी वर्ग यह समझे कि साहित्य समाज के मूल्यों का निर्धारक है और उसके मूल तत्वों को संरक्षित करना जरुरी है क्योंकि साहित्य जीवन के सत्य को प्रकट करने वाले विचारों और भावों की सुन्दर अभिव्यक्ति है।

सन्दर्भ-

1. *साहित्य और समाज - रामधारी सिंह दिनकर*
2. *समाज और साहित्य - अंचल मात्रभाषा दारागंज, प्रयाग मंदिर दाराज*
3. *साहित्य का समाजशास्त्र मान्यता और स्थापना अंचल प्रकाशन मातृभाषा मंदिर दारागंज प्रयाग*
4. *समाज और साहित्य पार्ट-1 - आनंद कुमार प्रकाशक- हिंदी मंदिर, प्रयाग*
5. *प्राचीन भारतीय साहित्य*
6. *शास्त्रीय संस्कृत साहित्य*